GURU KAHAN ART MUSEUM

“भक्तामर स्तोत्र” - कला प्रदर्शन

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां वन्दे तद्गुण लब्धये।।

श्रमण भक्ति परम्परा में मुनि श्री मानतुङ्गाचार्य द्वारा रचित भक्ति रस का यह अनुपम स्तोत्र युगों-युगों से कोटि-कोटि भक्तों का कंठाहार बना हुआ है। भक्तामर स्तोत्र एक भक्ति काव्य है, जिसमें इस युग के आदि तीर्थंकर भगवान श्री आदिनाथ की स्तुति की गयी है। इस भक्ति काव्य की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इसे किंचित फेरफार के साथ जैन समाज के दिगंबर और श्वेतांबर - सभी लोग इस स्तोत्र द्वारा प्रतिदिन वीतरागी परमात्मा की स्तुति, भक्ति एवं आराधना करके अपने जन्म-जन्मांतरों के पापों को क्षीण करते रहे हैं।

मुनिराज मानतुंग द्वारा रचित इस स्तोत्र में ४८ श्लोक हैं और एक-एक श्लोक में जिनेन्द्र देव की अलग-अलग प्रकार से स्तुति कर वीतरागता की अनुमोदना व्यक्त की है। इस काव्य में जहां भगवान के आंतरिक वैभव की स्तुति की गई है, वहीं अष्ट प्रातिहार्य इत्यादि बाह्य वैभव की स्तुति करके भी विशुद्ध अध्यात्म की धारा बहाई गई है। इसी प्रकार जिनेन्द्र के भक्त को कौन-कौन से भय नहीं होते? –यह प्रतिपादन भी सहजरूप में हुआ है। तत्त्वज्ञानियों की श्रद्धा का भाजन तो यह इसलिये है ही कि इसमें निष्काम भक्ति की भावना निहित है इसमें कहीं ईश्वर कर्तृत्व की गंध भी नहीं आ पाई है; तथा ऐसा कहीं कोई संकेत नही मिलता है, जिसके द्वारा भक्त ने भगवान से कुछ याचना की हो या लौकिक विषय-वांछा की हो।

स्तोत्र की इन सभी विशेषताओं से प्रभावित होकर तथा सभी जीवों को काव्य का भावभासन कराने के उद्देश्य से पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा इस भक्तिपरक स्तोत्र के ऊपर धारावाही प्रवचन हुये जिसमें भक्तिप्रधान कथनों के द्वारा उत्पन्न भ्रान्तियों का निराकरण करके उनका समुचित समाधान उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन श्लोकों के प्रवचनों के मूलाधार से ४८ पेंटिंग (प्रतिकाव्य) तैयार की गई हैं जिन्हें प्रस्तुत प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया है। इस कार्य को चित्ररूप देने में जो कार्य चित्रकार श्री प्रशांत शहा द्वारा किया गया है उसके लिये संस्था उनकी आभारि है तथा इस कार्य में कार्यरत “गुरु कहान कला संग्रहालय” की पूरी टीम को धन्यवाद ज्ञापित करती है।

हम आशा करते हैं कि पूर्व में प्रदर्शित - बारह भावना, समयसार दृष्टान्त वैभव, बहिन श्री वचनामृत तथा उत्तम दश धर्म चित्र प्रदर्शनी की तरह यह प्रदर्शन भी भक्तामर स्तोत्र पाठी और आराधकों के लिये अत्यन्त उपयोगी साबित होगा। स्वचिंतन के साथ सभी जीव इन पेंटिंग्स के माध्यम से “भक्तामर स्तोत्र” के रहस्य को समझकर अपना मोक्षमार्ग सरल करें, यही भावना सह...

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई

गुरु कहान कला संग्रहालय

श्री दिगंबर जैन स्वाध्याय मंदिर संकुल, सोनगढ़ - ३६४२५०

Sachin Jain : +91 82095 71103 | info@gurukahanmuseum.org
www.gurukahanmuseum.org | /gurukahanmuseum

GURU KAHAN ART MUSEUM

पूज्य बहिनश्री चंपाबहिन की १०८वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में
गुरू कहान कला संग्रहालय, सोनगढ़ सादर प्रस्तुत करते है...

"भक्तामर स्तोत्र" - कला प्रदर्शनी





उद्घाटन दिन : मंगलवार,
दि. १०-०८-२०२१,
समय : प्रात: १०:०० बजे

श्री मानतुंग आचार्य विरचित आद्य तीर्थंकर
भगवान श्री आदिनाथ जिनेन्द्र स्तवन

भक्तामर-स्तोत्र

४८ काव्य पर आधारित ४८ चित्रपट

भावी पिढ़ी को धर्म समझने का सुनहरा अवसर...
अवश्य आईये और देखिये धर्म कला के माध्यम से

गुरु कहान कला संग्रहालय

श्री दिगंबर जैन स्वाध्याय मंदिर संकुल, सोनगढ़ - ३६४२५०

Sachin Jain : +91 82095 71103 | info@gurukahanmuseum.org
www.gurukahanmuseum.org | /gurukahanmuseum